[Social Issues and Environmental Problems,Vol.3 (Iss.9:SE): Sep, 2015] ISSN- 2350-0530(O) ISSN- 2394-3629(P)
Impact Factor: 2.035 (I2OR)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i9SE.2015.3217

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

"राजीव गाँधी जल प्रबधंन मिशन का ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक योगदान" (विकासखण्ड निवाली जिला बड़वानी (म.प्र.) के विशेष सन्दर्भ में)

बी.एस. निगवाले
शासकीय महाविद्यालय धरमपुरी

सारांश
भारतीय कृषि मानसून का जुआं है और यह जुआं भारतीय अर्थशास्त्र और भारतीय जनता सनातन काल से अपने कंधे पर रखे हुए शून्य में ताक रही है। वस्तु स्थिति यह है कि जल के अभाव मे भारतीय कृषि ही क्या भारत के उद्योग धंधें, कल–कारखाने, और समूची अर्थव्यवस्था ही ठप हो जाती है। पानी के अभाव में गहराता विद्युत संकट, सूखे पड़े खेत और बंद पड़े कल–कारखानों ने एक ओर हमारे राष्ट्रीय उत्पाद को प्रभावित किया है वहीं दूसरी तरफ हमारा अंतर्राष्ट्रीय निर्यात भी गड़बड़ाया है। फलतः एक ओर विदेशी मुद्रा की कमी की आपूर्ति और दूसरी ओर वर्तमान समस्याओं से निपटने के लिए भारी वित्तीय प्रबंधन।
"जल जो न होता तो ये जग जाता जल।"
हमारे यहाँ शास्त्रों में जल को "आदि–शक्ति", अमृत आदि कहा गया है। समस्त संसार जल के बिना अधुरा है। जल मानव शरीर का ही अंग नही अपितु जीव–जन्तु पेड़–पौधे, आदि सजीव चित्रों का एक अंग है और जल के बिना सभी जीव–जन्तु पेड़ पौधे अर्थात सभी सजीव प्राणी जिसमें मनुष्य भी शामील हैं समाप्त हो जायेंगें।
देश में अथाह जल भण्डार होते हुए भी हमें जल संचय की जरूरत क्यों पड़ रही है? इस विषय पर गंभीर विचार करें तो कई महत्वपूर्ण पहलु सामने आते है। जल समस्या के पिछे जल का प्रदुषण ही नही अपितु जल का अनियंत्रित एवं अनुचित दुरूपयोग भी कारण है। वास्तव में जल को अब एक दुर्लभ उपयोगी संसाधन मान लेना ही उचित होगा।

शोध शब्दावली
जल ही जीवन, जल प्रबंधन मिशन, आर्थिक योगदान, रोजगार के अवसर।

जल प्रबधंन मिशन का परिचय
पृथ्वी में जल का कुल आयतन 1.41 अरब घनमीटर है तथा इस कुल आयतन का अधिकांश भाग (लगभग 67.3 प्रतिशत) समुद्री जल अर्थात खारे पानी के रूप में है। यही जल अर्थात महासागरों में स्थिर जल वाष्पन द्वारा वर्षा के रूप में पृथ्वी के सभी क्षेत्रों में गिरता है तथा यही पानी फिर से खेतों, खेतों से नालों, नालों से महासागरों में पहुॅच जाता है और देश के सम्पूर्ण किसान इस प्रकिया को देखते ही रह जाते है। और साधनों के अभाव के कारण इस पानी का उपयोग लेने में असमर्थ हो जाता है। संसार के विभिन्न देशों में उपलब्ध जल की मात्रा और उसकी उपयोगिता पर दृष्टि डालें तो विदित होता है कि हमारे देश में जल की पर्याप्त उपलब्धता तो है लेकिन प्रति व्यक्ति जल का उपयोग बहुत कम है। भारत में प्रति व्यक्ति का उपयोग मात्र 610 घनमीटर प्रतिवर्ष है जबकि आस्ट्रेलिया, अर्जेन्टीना, अमेरिका, और कनाड़ा में यह 1000 घनमीटर से भी अधिक है। इसी प्रकार घरेलू उपयोग में हम केवल 3 प्रतिशत जल का ही उपयोग कर पा रहे है जबकि इंग्लैण्ड, आस्ट्रेलिया, फ्रांस, और कनाड़ा आदि देशों में यह उपयोग 5 गुना से भी अधिक है। विश्व के अनेक देशों की भॉती भारत ने पिछले दशकों में देश की जनता को स्वच्छ जल उपलब्ध कराने हेतु योजनाऍ एवं

कार्यक्रम प्रारम्भ किये है विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं मे देश में शत्प्रतिशत लोगों को शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराने को सरकार द्वारा प्राथमिकता दी जाती रही है तथा इसी प्रकार से स्वतंत्रता के बाद से कई विकास योजनाएँ प्रारम्भ की गई है तथा इन सभी मुद्दों को मद्दे नजर रखकर सरकार ने सन् 1987 में देश की राष्ट्रीय जल निति घोषित की और यही से जल प्रबंधन मिशन का प्रारम्भ हुआ और आज यह मिशन देश के विकास कि लिए आवश्यक बनता जा रहा है।

जल प्रबंधन मिशन के उद्देश्य

निम्न उद्देश्यों की पूर्ति हेतु जगह–जगह पर बांध, नलकूप, मेढ़ तथा नदियों में बांध बनाकर नहरों द्वारा भूमि को सिंचित करना ही इस मिशन का उद्देश्य है।

1– पानी की रोकथाम
2– वन एवं मृदा संरक्षण।
3– भूमिगत जल स्तर उॅचा करना।
4– भूमिगत जल के अति दोहन को रोकना।
5– सूखे से ग्रस्त क्षेत्रों सिंचित करना ।
6– रोजगार के अवसरों में वृद्धि।
7– बंजर भूमी को सुधारना।

निवाली का परिचय

पश्चिम निमाड़ की शिमला कही जाने वाली निवाली के पश्चिम–उत्तर तथा दक्षिण तीनों और पहाड़ियाँ है जिससे मानसून पूर्ण रूप से आकर्षित होकर इस क्षेत्र में पानी बरसाता है। यहॉ की मिट्टी काली तथा लाल है जो फसलों के लिए अति उत्तम होती है। इस क्षेत्र में विरान जंगल था जो धीरे–धीरे कटता गया और लोग इस क्षेत्र में बसने लगे। इस क्षेत्र में मानसून का अच्छा होना, मिट्टी तथा तापमान का अच्छा होना इत्यादि कारणों से यहाँ फसलें अधिक पकती थी इस कारण इस क्षेत्र को रोटी का निवाला कहा जाता था और धीरे–धीरे इस क्षेत्र का नाम निवाली पड़ गया।

भौगोलिक दृष्टि से विकास खण्ड निवाली सतपुड़ा पर्वत श्रेणीयों की तलहटी में स्थित है। इसका भौगोलिक क्षेत्रफल लगभग 317 किलोमीटर है। इसका मुख्यालय बड़वानी से लगभग 87 कि.मी. दूर स्थित है। राष्ट्रीय राजमार्ग क्रमांक 3 (आगरा–मुंबई) से इसकी दूरी 20 कि.मी. है। निवाली तहसील में वर्तमान में 42 ग्राम पंचायतें है। यहाँ सिचाई के मुख्य साधन कुएँ, तालाब, ट्यूबवेल तथा नदी–नाले है। देश के अन्य क्षेत्रों की तरह निवाली मे भी महाद्वीपीय जलवायु पायी जाती है इस क्षेत्र में अधिकतम वर्षा अरब सागर से आने वाले दक्षिण–पश्चिम मानसून से होती है। शीत ऋतु में तापमान कभी–कभी 11 डिग्री सेल्सियस तक हो जाता है तथा ग्रीष्मऋतु में तापमान औसतन 41° रहता है और कभी–कभी 45–47 डिग्री सेल्सियस तक भी आंका जाता है। खनिज संसाधनों की दृष्टि से मध्यप्रदेश बहुत धनी राज्य है किन्तु मध्यप्रदेश की निवाली तहसील खनिज संसाधनों की दृष्टि बहुत गरीब है।

शोध का उद्देश्य

1 ''राजीव गाँधी जल प्रबंधन मिशन'' से ग्रामीण जनता को होने वाले आर्थिक लाभों को जानना।
2 ''राजीव गाँधी जल प्रबंधन मिशन'' से होने वाले स्वरोजगार अवसरों को जानना।

अध्ययन का क्षेत्र

राजीव गाँधी जल प्रबधंन मिशन मध्यप्रदेश के 9 सम्भागों में संचालित किया जा रहा है । समय एवं साधनों की कमी को ध्यान में रखकर मैनें मध्यप्रदेश के बड़वानी जिले की विकासखण्ड निवाली का चयन किया है। चूँकि निवाली को अनुसूचित जनजाति विकासखण्ड घोषित किया गया है। जहॉ अधिकांश जनसंख्या

आदिवासियों की है। नदी, तालाब, कुऐं, ट्यूबवेल इत्यादि के अभाव में इस क्षेत्र में अधिकांश कृषक खरीफ की फसल पर आश्रित है । ऐसी स्थिति में ''जल प्रबंधन मिशन'' का इस क्षेत्र में क्या योगदान रहा यह जानने की रूची मेरे मन में जागृत हुई। प्रस्तुत शोध में देव निदर्शन विधि द्वारा विकासखण्ड निवाली के 03 गाँवों (कानपुरी, वरल्यापानी, कन्नड़गॉव) को चयनीत कर प्रत्येक गॉव से 20–20 उत्तरदाताओं का प्रत्यक्ष साक्षात्कार लिया गया। कुल 60 उत्तरदाताओं के उत्तरों के माध्यम से राजीव गॉधी जल प्रबधंन मिशन का ग्रमीण क्षेत्रों में योगदान से होने वाले लाभ एवं रोजगार के अवसर में वृद्धि का पता लगाने का प्रयास किया गया।

अध्ययन की विधि

अनुसंधान कार्य में पूर्णता लाने एवं सूचारू रूप से संचालित करने के लिए एक उचित क्रम एवं आयोजन की आवश्यकता होती है। एक सुनिश्चित विधि के अभाव में सफलता अनिश्चित होती है। मेरे द्वारा किये गये अध्ययन में प्राथमिक समंको के साथ–साथ द्वितीयक समंको का प्रयोग भी किया गया है। अध्ययन के क्षेत्र में दर्शाये अनुसार देव निदर्शन विधि द्वारा विकासखण्ड निवाली के 03 गॉवों को चयनीत कर प्रत्येक गॉव से 20–20 उत्तरदाताओं का प्रत्यक्ष साक्षात्कार लिया गया। कुल 60 उत्तरदाताओं के उत्तरों के माध्यम से "राजीव गॉधी जल प्रबधंन मिशन" का ग्रमीण क्षेत्रों में योगदान से होने वाले लाभ एवं रोजगार के अवसरों में वृद्धि का पता लगाने का प्रयास किया गया।

उपकल्पना

(1) "राजीव गाँधी जल प्रबंधन मिशन" से ग्रामीण जनता में कोई आर्थिक सुधार नही हुआ है।

सर्वेक्षण से प्राप्त समंको का विश्लेषण

विकासखण्ड निवाली के 03 गाँवों के 60 उत्तरदाताओं से साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर राजीव गाँधी जल प्रबधंन मिशन का ग्रामीण क्षेत्रों में योगदान से होने वाले आर्थिक लाभ का पता लगाने का प्रयास किया गया।

साक्षात्कार अनुसूची से प्राप्त समंको को दर्शाने वाली तालिका

क्र.	लाभ का आधार	हॉ	थोड़ा–बहुत	नही	कुल
01	ऐसे उत्तरदाता जो मानते है कि मिशन से पानी की रोकथाम, वन एवं मृदा संरक्षण, भूमिगत जल स्तर का बढ़ना, भूमिगत जल के अति दोहन को रोकना, सूखे से ग्रस्त क्षेत्रों का सिंचित होना ।	52	06	02	60
02	ऐसे उत्तरदाता जिन्हे मिशन से सीधा आर्थिक लाभ हुआ है।	48	08	04	60
	कुल	100	14	06	120

स्त्रोत – सर्वेक्षण के आधार पर

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि मिशन से पानी की रोकथाम मे वृद्धि, वन एवं मृदा संरक्षण, भूमिगत जल स्तर का बढ़ना, भूमिगत जल के अति दोहन को रोकना, सूखे से ग्रस्त क्षेत्रों का सिंचित होना मानने वाले 87 प्रतिशत उत्तरदाता रहे है, वही थोड़ा–बहुत कहने वालों का 10 प्रतिशत रहा है। तथा 3 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे है जो मिशन के महत्व को नही मानते है। यदि हम प्राप्त आकड़ों से आर्थिक लाभ को जाने तो 80 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे है जिन्हे मिशन से आर्थिक लाभ पहुॅचा है, जबकि थोड़ा–बहुत लाभ हुआ ऐसा मानने वाले उत्तरदाताओं का 13 प्रतिशत रहा है। ऐसे उत्तरदाता जो मानते है की उन्हे मिशन से कोई लाभ नही

हुआ है उनका प्रतिशत 7 रहा है। विश्लेषण के आधार पर निष्कर्ष निकाले तो पाते है कि राजीव गॉधी जल प्रबंधन मिशन से ग्रामीण जनता को आर्थिक लाभ हुआ है अतः उप–कल्पना असत्य सिद्ध हुई है।

मिशन के प्रभाव

1 समाज पर प्रभावः– जल प्रबंध मिशन से समाज को कई प्रकार के लाभ प्राप्त हुए है। मिशन के प्रारंभ होने से प्रदेश की उत्पादन क्षमता में वृद्धि हुई है तथा ग्रामिणों को रोजगार के अवसर प्राप्त हुए है। ग्रामीण जनता की जल प्रबंधन के संबध में सोच क्षमता में वृद्धि हुई है। इस मिशन से खेत का पानी खेत में देश का पानी देश में होने से न केवल पीने के पानी की समस्या हल हुई है, अपितु उत्पादन प्रक्रिया में भी वृद्धि हुई है।

2 जल पर प्रभावः– भूमिगत जल की स्थिति के अतिरिक्त देश में वर्षा से प्राप्त जल की स्थिति का अवलोकन करें तो पता चलता है, कि वर्षा से हमारे देश में लगभग 70 हजार एकड़ घन मीटर जल प्रतिवर्ष प्राप्त होता है। अर्थात वर्षा जल, मृदा जल, नदी व झीलों का जल, तालाबों व नमी के जल सहित पृथ्वी के कुल जल का 5.52 प्रतिशत है अर्थात वर्षा से प्राप्त कुल जल को ही रोक लिया जाये तो, 70 करोड़ एकड़ भूमि की सतह से जल उपर उठ जायेगा। विश्व के अनेक देशों के भांति भारत में देश की जनता को स्वच्छ जल उपलब्ध कराने हेतु योजनाऐं एवं कार्यक्रम प्रारंभ किये गये है। विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं में देश में शत्प्रतिशत लोगों को शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराने को सरकार द्वारा प्राथमिकता दी जा रही है। जल प्रबंधन मिशन से भूमिगत जल का विकास देश को जलाभाव से उत्पन्न सुखे की स्थिति से बचाने में अत्यन्त सहायक रहा है।

3 कृषि पर प्रभावः– जल प्रबंधन मिशन का कृषि पर काफी प्रभाव पड़ा है, देश में जहां केवल वर्षा ऋतु से कृषि की जाती थी, वहां जल प्रबंधन के कारण वर्ष में एक फसल की जगह दो या तीन फसले ली जाने लगी है। कारण यही है, कि जगह–जगह जल प्रबंधन से नदी–नालों, तालाबों, नहरों, कुओं, नलकुपों आदि में पानी की वृद्धि ने सुखे को हरियाली में बदलकर देश में कृषि क्षेत्र को एक नया रूप दिया है।

4 आर्थिक प्रभावः– जल प्रबंधन मिशन का देश के आर्थिक विकास पर भी प्रभाव पड़ा है। देश के 50 प्रतिशत सिचिंत क्षेत्र का पोषण भूमिगत जल द्वारा किया जाता है, और सिंचित क्षेत्र के कुल उत्पादन का 70 से 80 प्रतिशत भाग इस सिंचाई साधन पर आश्रित है, जिससे सकल राशि उत्पाद में यह 9 प्रतिशत का योगदान करता है। इस जल से सिंचित इलाके में फसलें 33 से 50 प्रतिशत तक अधिक होती है।

निष्कर्ष

मिशन से "खेत का पानी खेत में देश का पानी देश में" होने से न केवल पीने के पानी की समस्या हल हुई है, अपितु उत्पादन प्रक्रिया में भी वृद्धि हुई है। जल प्रबंधन के संबध में ग्रामीणों की सोच क्षमता में वृद्धि होने के साथ–साथ उन्हें रोजगार के अवसर भी प्राप्त हुए है। एक ओर जल प्रबंधन मिशन से भूमिगत जल का विकास देश को जलाभाव से उत्पन्न सुखे की स्थिति से बचाने में अत्यन्त सहायक रहा है वहीं दूसरी ओर देश में जहां केवल वर्षा ऋतु से कृषि की जाती थी, वहां जल प्रबंधन के कारण वर्ष में एक फसल की जगह दो या तीन फसले ली जाने लगी है साथ ही मिशन के योगदान से देश के सकल उत्पादन में भी वृद्धि हुई है। यदि हम सर्वेक्षण से प्राप्त समंको के विश्लेषण के आधार पर भी निष्कर्ष निकाले तो पाते है कि राजीव गॉधी जल प्रबंधन मिशन से ग्रामीण जनता को आर्थिक लाभ हुआ है अतः उप–कल्पना असत्य सिद्ध हुई है।

सुझाव

1 बहते वर्षा जल के वेग में कमी करना, ताकि मिट्टी का कटाव रुक सके।

2 क्षेत्र से प्रवाहित होकर बाहर जाते हुए वर्षा जल को क्षेत्र में ही गड्डों, मेढ़ों एवं बांधों व डेम के माध्यम से रोका जावे ताकि मिट्टी की सतह में अधिक से अधिक समय तक नमी को संधारित करने के साथ–साथ भू–जल भंडारों में अपेक्षित वृद्धि कर भू–जल स्तर में वृद्धि की जा सके।

3 प्राकृतिक वनस्पति के आवरण में वृद्धि करना, ताकि पर्यावरणीय संतुलन में स्थायित्व लाया जा सके।

4 जलाऊ लकड़ी का उत्पादन, पशुओं के लिये चारे का उत्पादन तथा आया के वैकल्पिक स्त्रोत सृजित करना, ताकि वनों पर पड़ने वाले दबाव को कम किया जा सके।

5 नवीन कृषि पद्धतियों को अपनाना।

सन्दर्भ

1. कार्य योजना पत्रिका
2. वार्षिक रिपोर्ट (राजीव गांधी जल प्रबंधन मिशन)
3. योजना पत्रिका जुलाई 2000
4. ग्रामिण अभियांत्रिकी सेवा विभाग से प्राप्त डाटा।
5. न्यूज पेपर (दैनिक भास्कर)